मध्यप्रदेश स्टेट लीडरशिप अकादमी, एन.सी.आर.टी , भोपाल

राज्य शिक्षा केन्द्र,

पुस्तक भवन बी.विंग अरेरा हिल्स भोपाल म.प्र. - 462011

दूरभाष: - 0755- 2552368

मॉड्यूल क्रमांक - 5

शीर्षक: प्रधानाध्यापक का एक कदम स्वच्छता की ओर मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में

मॉड्यूल का क्षेत्र : प्रधानाध्यापक का विद्यालय नेतृत्व

मॉड्यूल के उद्देश्य -

1. विद्यालयों में स्वच्छता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

2. विद्यालयों में स्वयं नेतृत्व कर अधिगम और गुणवत्ता सुधार हेतु सार्थक बदलाव करना।

कीवर्ड – **विद्यालय, स्वच्छता , अधिगम , स्वच्छता का सीखने - सिखाने पर प्रभाव नेतृत्व**

प्रस्तावना -

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने अपने आस.पास के लोगों को स्वच्छता बना, रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने स्वच्छ भारत का

सपना देखा था कि भारत के सभी नागरिक ,क साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें।

इसी सपने को साकार करने के लिए, दिनांक 2 अक्टूबर 2014 को भारत के तत्कालींन प्रधानामंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान प्रारंभ किया और इसके सफल क्रियान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से जुड़ने की अपील की। स्वच्छ भारत अभियान सफाई करने की दिशा में प्रतिवर्ष 100 घंटे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

स्वच्छ भारत अभियान का उदेश्य केवल आस-पास की सफाई करना ही नहीं अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर ,एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत के निर्माण ,वं देश की छवि सुधारने का यह सही समय व अवसर है। यह अभियान नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने एवं हमारे देश की स्वच्छता के लिए काम कर रहे लोगों को मदद करेगा। (साभार india.gov.in)

स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय परिप्रेक्ष्य -

मध्यप्रदेश के शासकीय विद्यालयों में स्वच्छता ,वं साफ.सफाई को बढ़ावा देने के लि, स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार योजना का क्रियान्वयन किया गया है। इस योजना के अंतर्गत विद्यालयी स्वच्छता को तीन भागों में बांटकर देखा जा सकता है। पर्यावरण संबंधी स्वच्छता, विद्यालय परिसर संबंधी स्वच्छता व व्यक्तिगत स्वच्छता।

पर्यावरण संबंधी स्वच्छता - विद्यालय में ऑक्सीजन देने वाले पेड़-पौधों तुलसी , नीम, पीपल , बरगद , आम आदि को लगाना समय समय पर उसके आस पास की सफ़ाई करना , पानी देना और संरक्षण करना।

विद्यालय परिसर संबंधी स्वच्छता - विद्यालय में पीने योग्य पानी की व्यवस्था, हेंडवॉश यूनिट , स्वच्छता संबंधी गतिविधियॉ, हाथ.धुलाई कार्यक्रम ,शौचालय की नियमित साफ.सफाई , विद्यालय परिसर की नियमित साफ़- सफ़ाई आदि कार्य करना।

व्यक्तिगत स्वच्छता - बालक बालिका शौचालय जिसमें पानी की व्यवस्था हो , बालिका शौचालय में इन्सिनरेटर , सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन की व्यवस्था , उपयोग की जानकारी साबुन , टॉवल, नेलकटर, तेल, कंघी, आईने की उपलब्धता और उपयोगिता सुनिश्चित करना ।

ज़रा सोचिये -

1. विद्यार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य उसके शैक्षणिक स्तर पर किस तरह प्रभाव डालता है।

....
....
....
....

2. विद्यार्थियों के नामांकन और ठहराव के लिए, आपके विद्यालय में कौन - कौन सी स्वच्छता सुविधाएँ क्रियाशील हैं|

....
....

3. विद्यालय का स्वच्छ वातावरण किस प्रकार बच्चों की भागीदार को बढ़ाने में मदद करता है।

....
....

अभी आपने जिन सवालों के जवाबों को लिखा है, उन्हीं सवालों के जवाब राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शाला नेतृत्व व समुदाय की सहभागिता के संदर्भ में भी कई महत्वपूर्ण विचार दिए गए हैं जिसमें अधोसंरचना, स्वच्छता और उसका बच्चे के स्वास्थ्य शारीरिक एवं मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित किया गया है। जिसे निम्नानुसार समझा जा सकता है-

बिंदु क्रमांक 2.9 के अनुसार-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रू जब बच्चे कुपोषित या अस्वस्थ होते है तो वह बेहतर रूप से सीखने में असमर्थ हो जाते है। इसलि, बच्चों के पोषण और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान

दिया जायेगा। पुष्टिकर भोजन और अच्छी तरह से प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं काउन्सलर और स्कूल शिक्षा प्रणाली में समुदाय की भागीदारी के साथ साथ शिक्षा प्रणाली के अलावा विभिन्न सतत उपायों के माध्यम से किया जा,गा। सभी विद्यालय के बच्चें स्कूलों द्वारा आयोजित नियमित स्वास्थ्य जांच में भाग लेंगे और इसके लि, बच्चों को स्वास्थ्य कार्ड जारी कि, जाएंगे। इसके अलावा कई सारे अध्ययन से ये पता चलता है कि सुबह के पौष्टिक नाश्ते के बाद के कुछ घंटों में कई सारे मुश्किल विषयों का अध्ययन अधिक प्रभावी होता है।

इसलि, यह आवश्यक है कि विद्यालयों में इस प्रकार कि गतिविधियों का संचालन हो जो न सिर्फ विद्यालय के परिसर को साफ़ रखने में मदद करे बल्कि उसके विशेष उद्देश्य , सीखने सिखाने के वातावरण का भी निर्माण करे द्य स्वछता सम्बन्धी प्रयास बच्चों पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं इसे समझने के लिए, हम एक केस स्टडी का अध्ययन करते हैं।

'केस स्टडी'

शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाड़ा, विकासखंड-सिवनी, जिला -सिवनी ,यह वही कान्हीवाड़ा जहां के मिट्टी के मटके (घड़े) ठण्डे पानी के लिये दूर दूर तक प्रसिद्ध है। ग्राम के आस-पास के क्षेत्रों में छीन्द के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं, इनसे झाड़ू बनाने का काम, आय का एक अच्छा साधन है। कान्हीवाड़ा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान केवलारी से पश्चिम की ओर लगभग 30 किलोमीटर दूर केवलारी सिवनी मार्ग पर स्थित है, वहीं सिवनी जिला मुख्यालय से 26 किलोमीटर पूर्व की ओर सिवनी मंडला मार्ग पर स्थित है। यहां बस स्टैंड, दुर्गाचौक होकर ग्राम कान्हीवाड़ा के छोर पर स्थित कन्या माध्यमिक विद्यालय पहुंचा जा सकता है। विद्यालय भवन के उत्तर की ओर आवासीय मकान एवं बड़ी रेललाईन, स्टेशन है, पश्चिम की ओर आवासीय मकान हैं, पूर्व की ओर नहर एव कृषि भूमि, दक्षिण की ओर तालाब, कृषि भूमि एवं आवासीय कॉलोनी है। यह आदिवासी बाहुल्य ग्राम है, यहां गौंड एवं बैगा विमुक्त घुमक्कड़ जाति, अधिकता में निवास करती है। इस ग्राम की कुल जनसंख्या 8616 है, जिसमें 4169 महिला, 4447 पुरूष है। इस ग्राम में अधिकांश गरीब तबके, निम्न आय वर्ग के व्यक्ति निवास करते है, जिनकी आय 5 लाख रूपये प्रतिवर्ष से कम है। यहां के अधिकांश व्यक्तियों का व्यवसाय क्रमशरू कृषि, कृषि व्यापार, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण, मजदूरी, अन्य व्यवसाय है। यहां राष्ट्रीयकृत बैंक, शासकीय अस्पताल, जवाहर नवोदय विद्यालय, एक बालक शासकीय माध्यमिक

विद्यालय, एक शासकीय कन्या हाई स्कूल, तीन शासकीय माध्यमिक विद्यालय, शासकीय उर्दु विद्यालय, छह शासकीय प्राथमिक विद्यालय, पांच प्राईवेट माध्यमिक विद्यालय अंग्रेजी माध्यमिक संचालित हैं। यहां डाकघर ,वं पुलिस थाना भी स्थित है ।

इसी कान्हीवाड़ा के आस पास के क्षेत्रों का रूडयार्ड किपलिंग की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक “द जंगलबुक ” में मोगली ,बघीरा , शेरखान , भालू (बालू) , (अजगर) अमोदागढ़ ,जैव विविधता वन्य जीवन आदि की कहानी का मनोरम चित्रण वर्णित है –

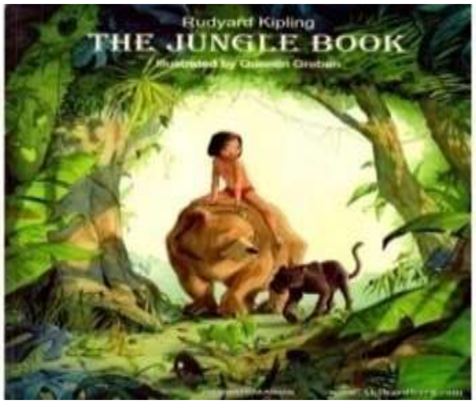

इस विद्यालय का भवन निर्माण बहुत ही सुसंगत ढंग से हुआ था, जिसमें परिसर की स्वच्छता, विद्यार्थियों में निजी स्वच्छता का बोध, शौचालय. मूत्रालय का समुचित रखरखाव , जल तथा भूमि का उचित प्रबंधन, शुद्ध पेय जल की उपलब्धता , विद्यालय के सौन्दर्यीकरण की दिशा में कार्य करने के पर्याप्त अवसर देखभाल से, अजीब सा जुनून एवं उत्साह स्वयं से उत्पन्न होने लगा था।

कक्षा की साफ सफाई, भृत्य का अभाव के साथ विद्यालय से लगी घास भूमि के लगभग 2 एकड़ रकबा जो देश की आजादी के पहले से भूमाफिया के अवैध कब्जे में अतिक्रमित था, इस हेतु प्राचार्य शासकीय कन्या हाईस्कूल कान्हीवाड़ा द्वारा 11 फरवरी 2016 को प्रधानाध्यापक, शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाड़ा को सीमांकन हेतु अधिकृत किया गया।

17 जून 2016 को प्रधानाध्यापक ने कलेक्टर महोदय के सहयोग से विकट परिस्थितियों में भी की गई एक सार्थक पहल, अदम्य साहस, सूझ- बूझ, प्रशासनिक कुशलता एवं दूर दर्शिता

से रकबा 0.02 हेक्टयर गुमशुदा भूमि का सीमांकन कराकर यह भूमि अतिक्रमण मुक्त कराकर , आवासीय प्लाट की रजिस्ट्री निरस्त कराई। यह अपने -आप में विद्‌यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी।

इस भूमि में की पहल के चलते ग्राम पंचायत कान्हीवाड़ा के सरपंच ने पंचायत निधि 3ण्88 लाख रूपये से समतलीकरण, रोलर चलाकर खेल मैदान निर्माण में अभूतपूर्व योगदान किया।

उल्लेखनीय है कि 18 जून 2019 को पुनः सीमांकन, प्रतिवेदन उपरांत इस भूमि में चारदीवारी निर्माण का कार्य आरंभ किया जाकर पूर्णता की ओर है, जिससे छात्राओं, पालकों, शिक्षकों, आम नागरिकों में हर्ष व्याप्त है। इस हेतु 15 अगस्त 2019 और 05 सितम्बर 2019 को शिक्षक सम्मान समारोह में उत्कृष्ट शौचालय निर्माण, खेल मैदान हेतु राशि जुटाने ए.एल.एम. शिक्षण हेतु जिला कलेक्टर द्‌वारा प्रशस्ति प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है।

विद्‌यालय परिसर के वर्षा जल के निस्तारण हेतु लगभग 60 फुट की नाली का निर्माण सीमेंट, कंक्रीट से किया गया जिससे प्रार्थना सभा स्थल में कीचड़ होना बंद हो गया है। हैंडपंप से निकलने वाले जल के निस्तारण हेतु वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक का प्रयोग कर, 70 फुट लम्बी छिद्रित नाली के निर्माण से नाली के दोनों ओर कक्षा वाटिकायें पुष्पित हो रहीं है और वातावरण भी सुगंधित एवं आकर्षक हो गया है। इसकी देखरेख विद्यार्थी स्वयं करती है। इसमें विद्‌यालय परिसर से बीनी गई गिट्टियों का उपयोग नाली का बेस तैयार करने में किया गया। विद्‌यालय में संचालित गतिविधियों में छात्र.शिक्षक सहयोग परस्पर देखा जा सकता है जिसे वरिष्ठ अधिकारियों द्‌वारा सराहा जा रहा है।

समस्या और उनके समाधान में छात्राओं का योगदान एवं महात्मा गांधी जी ने जैसे स्वच्छता को हथियार बना स्वतन्त्रता आंदोलन चलाया था ठीक उसी तरह इस विद्‌यालय में स्वच्छता के माध्यम से छात्राओं के व्यवहार में बदलाव की पूरी कहानी, स्वच्छता के विभिन्न आयामों की यात्रा स्वयं तय करते हुए, अपनी सफलता की कहानी स्वयं बया कर रही है।

इन्ही बातों को ध्यान में रखकर अतिशीघ्र विद्यालय की अन्य समस्याओं को छात्राओं शिक्षकों के परस्पर सहयोग से निपटाने की योजनायें बनाई और विभिन्न गतिविधियों का क्रियांन्वयन किया।

लगभग 3 वर्षों से यह स्वच्छता कार्यक्रम चल रहा है, शाम को प्रार्थना के बाद भी विद्यालय उतना ही साफ रहता है जितना प्रातः 11 बजे रहता था। छात्राओं ने अपने व्यवहार में बदलाव कर, चाकलेट के रैपर, नमकीन, बिस्किट के खाली पैकेट, आँवले, बेर की गुठलियाँ, मूंगफल्ली के छिल्के, लालीपॉप की डंडियाँ, कागज, पॉलीथिन अन्य कचरा ग्राउण्ड, खिड़कियों से फैंकना बंद कर दिया है जिसकी चर्चा सम्पूर्ण जिले एवं संभाग में है। विद्यालय की स्वच्छता राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल के ओआईसी द्वारा भी मुक्त कंठ से सराही गई है।

विद्यालय प्रशासन की लगातार सार्थक पहल, मांगों, मौखिक निवेदनों का परिणाम मिला और “एक बालिका शौचालय इकाई ” हेतु 122400 रूपये की राशि शाला प्रबंधन समिति के खाते में जमा हुई। समिति ने कुशल नेतृत्व एवं योजना से माध्यमिक विद्यालय स्तर पर एक आदर्श शौचालय बनाकर प्रदेश स्तर पर अपनी जगह बनाई है, जिसकी प्रशंसा समय-समय पर अधिकारियों द्वारा की जाती है।

बालिकाओं के सेनेटरी पेड के डिस्पोजल हेतु “इन्सिनिरेटर” का निर्माण भी किया गया है, जो कार्यरत है।

उपलब्ध पेयजल की गुणवत्ता का परीक्षण जिला स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से करायी जाकर उस पर यूनीसेफ प्रतिनिधि जबलपुर की राय ली गई। वहीं जनसहयोग द्वारा विद्यालय में वाटर प्यूरीफायर प्रदान किया गया, जिससे बालिकाओं , शिक्षकों को शुद्ध पेयजल प्राप्त हो रहा है।

छात्र परस्पर सहयोग का ही प्रतिफल है कि यह विद्यालय प्रदेश स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है। यहाँ की शैक्षिक प्रगति भी कमतर नहीं है। विगत वर्ष सत्र 2018.19 प्रतिभापर्व में विद्यालय 84 प्रतिशत अंक प्राप्त कर “ए” ग्रेड में रहा है। सत्र 2019.20 में 161 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं जिसका जातिवार विवरण निम्नानुसार है।

इस विद्‌यालय के छात्र-शिक्षक का उत्साह और लगन देखते ही बनता है। मोगली उत्सव, आस.पास की खोज, विज्ञान मित्र क्लब, हिन्दी ओलम्पियाड, गणित ओलम्पियाड में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी का निर्वाह करते हैं। कहानी उत्सव में विद्‌यालय जिले में विशेष स्थान रखता है।

जरा सोचिये -

1. यदि इस विद्‌यालय में बतौर प्रधानाध्यापक आप होते तो क्या करते हैं?

....
....

2. विद्‌यालय में स्वच्छता संबंधी क्या - क्या कार्य किये जा सकते हैं?

....
....

समस्याओं का समाधान -

उक्त कहानी में कई समस्याओं का सामना माध्यमिक विद्‌यालय कान्हीवाडा भी कर रहा था और उन्होंने उसके समाधान के लिए निम्न प्रक्रिया को अपनाया -

1. प्रधानाध्यापक ने अतिशीघ्र विद्‌यालय की समस्याओं को विद्‌यार्थियों एवं शिक्षकों के परस्पर सहयोग से निपटाने की योजनायें बनाई। फिर प्रार्थना के बाद प्रार्थना सभा स्थल में बिखरी गिट्टी (काले पत्थर) और कचरा बीने एवं उनके समुचित निस्तारण की व्यवस्था “स्कूल स्वच्छता की पोजीशन लें” के निर्देश के साथ विद्‌यार्थी दो हाथ का अन्तर लेते है एवं विद्‌यालय परिसर की स्वच्छता शिक्षक एवं विद्‌यार्थी मिलकर “मेंरी शाला मेरी जिम्मेदारी” के भाव से नियमित बिना किसी दबाव के खेल खेल में करतेहैं ।

2. विद्‌यालय प्रशासन की लगातार सार्थक पहल,मांगों,मौखिक निवेदनों का परिणाम मिला और बालिका शौचालय इकाई हेतु 122400 रूपये की राशि विद्‌यालय प्रबंधन समिति के खाते में जमा हुई। समिति ने कुशल नेतृत्व व योजना से माध्यमिक विद्‌यालय स्तर पर एक आदर्श शौचालय बनाकर प्रदेश स्तर पर अपनी जगह बनाई है जिसकी प्रशंसा समय समय पर माननीय केन्द्रीय पर्यवेक्षक विधान सभा निर्वाचन,लोक सभा निर्वाचन व डाइट

प्राचार्य,शिक्षा विभाग के जिला व संभागीय अधिकारी द्वारा की जा रही है। बालिकाओं के सेनेटरी पेड के डिस्पोजल हेतु इन्सिनेटर का निर्माण भी किया गया है जो कार्यरत है।

2. माध्यमिक विद्यालय के कक्षों की मरम्मत के उपरांत उनकी पुताई इमलशन से कराने से कक्ष मनमोहक व स्वच्छ हुए है वहीं छात्राओं का कक्षाओं में मन लग रहा है। श्यामाप्रसाद मुखर्जी रूरबन योजना भोपाल से विद्यालय के विद्युतीकरण हेतु 19 लाख रूपये की राशि से विद्युत फिटिंग, प्रत्येक कक्ष में चार पंखों का सपना साकार हुआ।

3. विद्यार्थी प्रतिदिन आसपास का कचरा. कागज ,पत्ते,ईट के टुकड़े,काली गिट्टी आदि को निर्धारित स्थल में रखे डस्टबिन में डाल देते है फिर एक डेढ़ मिनट के इस श्रमदान के बाद पंक्तिबद्ध हो अपनी अपनी कक्षा में चले जाते है। स्वच्छता का यह क्रम लगातार आज भी जारी है। इस विद्यालय स्वच्छता अभियान में प्रधानाध्यापक स्वयं एवं सभी शिक्षक शामिल रहते हैं। इस अभियान में जनशिक्षक, सरपंच, पंच, सदस्य, गणमान्य नागरिकों द्वारा उपस्थित रहकर इस कार्य में अपनी सहभागिता दी जा रही है।

4. उपलब्ध पेयजल की गुणवत्ता का परीक्षण जिला स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से करायी जाकर उस पर यूनीसेफ प्रतिनिधि जबलपुर की राय ली गई। वहीं सेवानिवृत्त शिक्षिका श्रीमति राजेश्वरी चौबे द्वारा 30 हजार की लागत से वाटर प्यूरीफायर प्रदान किया गया है जिससे बालिकाओं, शिक्षकों को शुद्ध पेयजल प्राप्त हो रहा है।

5. विद्यार्थी.शिक्षक परस्पर सहयोग का ही प्रतिफल है कि, यह विद्यालय प्रदेश स्तर चर्चा का विषय बना हुआ है। यहाँ की शैक्षिक प्रगति भी कमतर नहीं है। विगत वर्षो में प्रतिभापर्व में विद्यालय 84 प्रतिशत अंक प्राप्त कर “ए” ग्रेड में रहा।

आदिवासी बाहूल्य क्षेत्र में स्वच्छ विद्यालय नेतृत्व की चुनौतियाँ

माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाडा जो कि एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है, वहाँ कई तरह की चुनौतियाँ भी मौजूद थी। जिस पर प्रधानाध्यापक ने लगातार काम किया और विद्यालय को एक आदर्श के रूप में सभी के बीच प्रस्तुत किया है। विद्यालय सम्बन्धी कुछ चुनौतियों को इस माड्यूल में समझा जा सकता है .

1. **विद्यार्थियों से संबंधित चुनौतियाँ** -

   विद्यालय में किसी भी सफ़ाईकर्मी की पदस्थापना न होने से सभी विद्यार्थियों को अपनी - अपनी कक्षाओं की स्वच्छता का ध्यान स्वयं रखना पड़ता है।

2. **शिक्षकों से संबंधित चुनौतियाँ -**

   स्वच्छता एवं परिसर के रखरखाव हेतु शिक्षकों द्वारा लगातार संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि समुदाय के कुछ लोग विद्यालय परिसर में गन्दगी फैला कर उसे नुक्सान पहुँचाते हैं। विद्यालय में सफाईकर्मी की नियुक्ति न होना ,एक बड़ी चुनौती है।

3. **अभिभावकों से संबंधित चुनौतियाँ -.**

   स्वच्छता संबंधी गतिविधियों में भाग न लेना और उसे अपनी आदतों में शामिल न करना ,एक बड़ी समस्या रही है। कई अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों की स्वच्छता संबंधी आदतों की निगरानी नहीं की जाती है जिसका कारण अभिभावकों में स्वच्छता संबंधी जागरूकता का अभाव है।

4. **समाज से जुड़ी चुनौतियाँ** -

   विद्यालय परिसर का हेंडपंप उपेक्षा का शिकार था, यहाँ समुदाय के कई लोग लगातार गन्दगी और कीचड़ फैलाते हैं जिस कारण बहुत सी बीमारियाँ फैलने का खतरा बना रहता है। इस विद्यालय परिसर को अपना न मानते हुए, समुदाय के कई लोग परिसर में मैदान को शौचालय की तरह उपयोग करते हैं। जिससे विद्यार्थियों में संक्रामक बीमारियों का खतरा बना रहता है|

समेकन- हम हमेशा से यह सुनते आ रहे हैं कि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसके आस -पास के वातावरण कि झलक आपको नज़र आती है, चाहे वह उसकी आदतों में हो, रहन -सहन के तरीके में या उसकी सोच में। उसी प्रकार जब हम बच्चों के जीवन में विद्यालय के महत्व को समझते हैं तो उसका नाता न सिर्फ उसकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है बल्कि उसके पूरे व्यक्तितत्व पर पड़ता है। बतौर प्रधानाध्यापक यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम विद्यालय के वातावरण को इस प्रकार तैयार करें जिससे कि वह सीखने .सिखाने कि प्रक्रिया में मददगार साबित हो। साफ़ और स्वच्छ विद्यालय न सिर्फ आकर्षक लगता है, बल्कि बच्चों को बहुत सी बीमारियों से दूर भी रखता है, इसके साथ-साथ साफ़-सफाई को उनके व्यक्तितत्व का हिस्सा भी बनाता है। हम सभी यह अच्छी तरह जानते हैं कि विद्यालय में सीखना.सिखाना न सिर्फ कक्षा.कक्ष के अंदर होता है बल्कि विद्यालय के हर कोने से बच्चों को कुछ. न कुछ सीखने को मिलता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि समय-समय पर प्रधानाध्यापक , शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों को ऐसी गतिविधियों में शामिल करें जिससे वे न सिर्फ स्वच्छता सम्बन्धी आचारों विचारों को सुनें बल्कि खुद करके भी देखें।

बतौर प्रधानाध्यापक हम यह भी कर सकते हैं-

- प्रधानाध्यापक द्वारा तत्परता, कुशल सूझबूझ, प्रशासनिक क्षमता का उपयोग करना ।
- अथक परिश्रम करने वाले शिक्षकों तथा समुदाय के लोगों की प्रशंसा करना और उन्हें प्रेरित करना ।
- किशोरों से किशोरावस्था संबंधी आवश्यकता , चुनौतियों और उनकी विशेषताओं पर बातचीत कर उन्हें व्यक्तिगत स्वच्छता , पोषण और स्वस्थ के प्रति जागरूक करना ।
- वर्तमान स्थिति ,कोविड 19 को देखते हुए , प्रधानाध्यापक के रूप में विद्यालय परिसर में स्वच्छता संबंधी सुविधाएं जैसे - सेनीटाईज़र, मास्क , साबुन इत्यादि कि व्यवस्था सुनिश्चित करना।

गतिविधि - विद्यार्थियों में स्वछता के गुणों का विकास करने के लिए, किन्हीं पाँच गुणों को पहचानि, और उसकी योजना बनाइये|

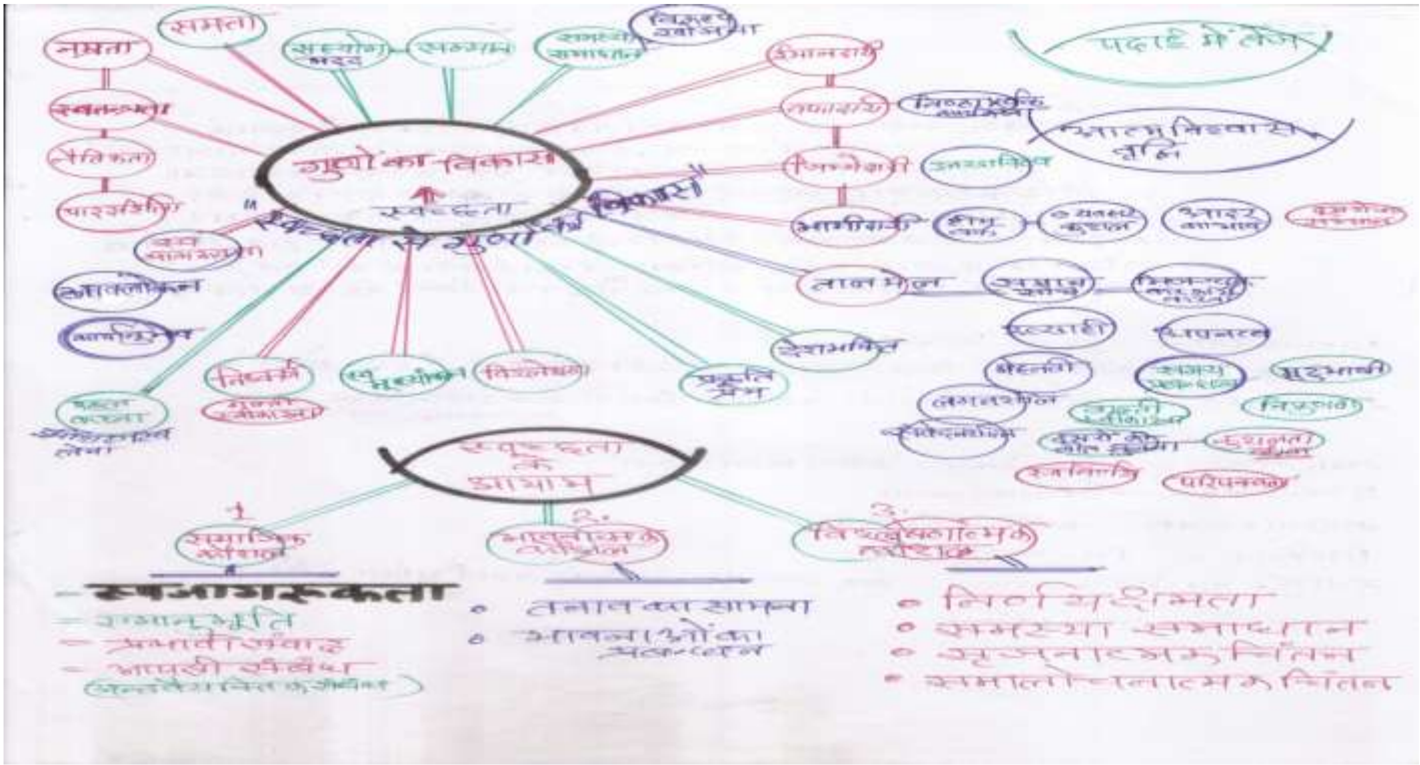

....
....
....
....
....

सन्दर्भः.

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, प्रथम संस्करण,अक्टूबर 2019 निष्ठा स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पहल- प्रशिक्षण पैकेज

2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,प्रथम संस्करण,नवम्बर2019 ,स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल -नेतृत्व पैकेज

3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली,राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

4. सर्व शिक्षा अभियान, मध्यप्रदेश, जनवरी2017 प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण.पठन सामग्री

5. राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल, म.प्र. यूनीसेफ के सहयोग से निर्मित

6. राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल म.प्र. 2019.20

7. दक्षता उन्नयन, वं शाला सिद्धि .शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका; माध्यमिक स्तरद्ध

8. राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल, म.प्र. 2018.19

9. मूलभूत दक्षता उन्नयन हेतु आनंददायी अधिगम गतिविधियां

10. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली,राष्ट्रीय षिक्षा नीति2010 ण्

11. निशुल्क, वं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम2009

वेब संसाधनः.

1. टेम्स इंडिया ट्रांसफॉर्मिग टीचिंग.लर्निंग प्रोसेस.लीडिंग टीचर्स प्रोफेषनल डेवलपमेन्ट

   https://www.open.edu/open learn create/course/view.php?id1911

2. डेवलपिंग प्रोफेशनललर्निंग कम्युनिटीज.लीडिंग टीचर्स प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट इन स्कूल लीडरशिप डेवलपमेन्ट फॉर सिस्टम लेवल ,डमिनिस्ट्रेटर्स.2017

   https://nesl_.niepa.ac.in/

वेब साइटः.

1. राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली

   https://nesl_.niepa.ac.in/

2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रषिक्षण परिषद, नई दिल्ली

   https://itpd.ncert.gov.in/

3. राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली

   https://pslm.niepa.ac.in/

4. राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शगुन पोर्टल , नई दिल्ली

   www.seshagun.nic.in

5. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, नई दिल्ली

   https://www.skill development.in

लेखक का नाम

राकेश देवांग(एनआरजी)

एपीसी , अकादमिकद्

जिला शिक्षा केन्द्र,भोपाल म.प्र.

rakeshdewang448@gmail.com

फ़ोन न. 9826405474